# भाईजी की बारह वाणियाँ

श्री श्री माँ के भक्त यह बारह बातें हमेशा याद रखें—

(१) भगवान् या ईश्वर कहने से हमारी धारणा में जो सम्मुख आता है वही माँ का मूर्त प्रकाश है। उनका शरीर और क्रीड़ाकौतुक सभी अप्राकृतिक और असाधारण हैं—ऐसी बुद्धि से प्रतिष्ठित हो सब कर्म ध्यान और ज्ञान में उन्हें उपास्य देवी मान कर उनके चरण-कमलों को हृदय में स्थापित कर सकने पर परमार्थपथ में अन्य किसी आश्रय की आवश्यकता न होगी।

(२) देहधारी से ऊँचा न मान सकने पर उनकी उदारता, कर्तव्यपरायणता, प्रसन्नता, सौम्यता, समभाव आदि किसी एक गुण को आदर्श मान कर चलो।

(३) उनके हावभाव, बातें, हँसी-तमाशे, चलने-फिरने, खाने-पहनने आदि के साथ सौभाग्यवश किसी का संयोग हो तो साधारण बुद्धि से अपने को खो बैठना नहीं चाहिए वरन् सहिष्णुता के साथ उनके प्रत्येक कार्यकलाप के विशेषत्व तथा माधुर्य की हृदय में उपलब्धि करनी चाहिये।

(४) वे स्वाधीन हैं, इच्छा व अनिच्छा बद्ध जीव का धर्म है। वे इच्छा से कुछ कहतीं या बोलतीं नहीं हैं। हम लोगों का जैसा प्रयोजन है उसके अनुसार उनमें महती इच्छा का स्फुरण होता है।



(५) उनके द्वारा अथवा उनकी दृष्टि के द्वारा हम लोगों की बुद्धि-विवेचना के अनुकूल या प्रतिकूल जो कुछ घटे उसमें कुछ निगूढ़ रहस्य छिपा है ऐसा दृढ़ विश्वास रखकर बिना प्रतिवाद शान्त मन से सब ग्रहण करना चाहिये।

(६) किसी को सुकृति के फलस्वरूप यदि माँ उसे आदेश दें तो बिना कुछ सोचे, बिना दुविधा किये उसका प्रतिपालन करना चाहिये, कभी भूल से भी माँ की इच्छा और अपनी इच्छा मिलाने की चेष्टा न करो।

(७) उनको उन्हीं के भाव में (अपने को चाहे अच्छा लगे या बुरा) जितना रख सको उसी में जगत् का मंगल है। कभी इसके विपरित न हो इसका ध्यान रखो। उनके किसी भी काम में, यहाँ तक कि शरीर रक्षा सम्बन्धी सुविधाओं में भी हमारी बुद्धिविवेचना व्यर्थ है, उनका संकेत पाने पर उसका प्रतिपालन करो अन्यथा चुपचाप देखते-सुनते रहना ही अच्छा है।

(८) भगवान् की चिन्ता करो, यही भिक्षा वह सबसे माँगती हैं। उनकी सेवादि की अपेक्षा, साधन-भजन कर उनका कृपा-लाभ करना सहज है।

(९) उनके पास आने पर चरण स्पर्श की इच्छा जागे तो उस समय चित्त दर्पण की भाँति स्वच्छ होना आवश्यक है। जो जितना भूखा, प्यासा, श्रद्धाशील तथा शरणागत हो सकेगा उतना ही वह उनके अमृत-स्पर्श से तृप्ति कर सकेगा।

(१०) उनके निकट कुछ भेद-भाव नहीं है, अपना भाव ही उनके आकर्षण या विकर्षण का सूत्र है। जैसी जिसकी भावना

वैसी उसकी सिद्धि। उनके पास जो जितना शून्य मन और शरीर लेकर जायगा वह उतने सहज में पूर्णता की ओर अग्रसर होगा।

(११) उनके श्रीमुख की कोई भी बात व्यर्थ नहीं होती एवं उनकी स्मृति काल के बन्धन के अतीत है, यह स्मरण रखना आवश्यक है।

(१२) प्रारब्ध को मिटाने के लिए उत्कट तपस्या की आवश्यकता है। शोक-दुःख आदि हमारे प्रारब्ध में अवश्यम्भावी फल हैं—यह मन में निश्चय कर हर समय सुख-दुःख में उनकी कृपादृष्टि पर विश्वास कर चलना चाहिये।

●